

## स्तुति ऐं आशीष --

१५८

कुछु दीहँ रही नन्दगाम में, आया वृन्दावन धाम ।  
 करिनि कथा रघुवीर जी, साईं सुबुह शाम ॥  
 आनन्द रामायण कथा, नितु करिनि चोज मंझार ।  
 जहिं में नवां कलोल श्रीराम जा, बेहदि बे शुमार ॥  
 रज धणी रघुनाथ जा थिया, जिति किथि जै जैकार ।  
 साईं बि साराहीनि सनेह सां, गद् गद् थी हर वार ॥  
 कौड़ो न कोई राम राज में, हिक निमु ई हुई कौड़ी ।  
 फासी न पवे कहिंजे गले, रुगो दिले खे नोड़ी ॥  
 अन्धो न कोई राम राज में, हिकु अन्धो हो नारेलु ।  
 कंडो न को राम राज में, हुओ बबुर खे शेलु ॥  
 बधलु न कोई राम राज में, रुगो पोथी पण्डित बधनि ।  
 पर नारी ना परिसे कोई, रुगो तबीब नारि दिसनि ॥  
 दूती न काई राम राज में, रुगो श्रद्धा हेई दूती ।  
 जहिं सभिनी जी दिलि प्रभूअ जे, चरणनि में पूती ॥  
 ठगी न को कहिं सां करे, रुगो पहिंजे मन ठगिनि ।  
 हर हर मोड़े जगत खां, लालन लिव लगिनि ॥  
 चोरु न हो राम राज में, कनि पर दुख जी चोरी ।  
 रघुवर जे प्रेम रस में, हुई सभिनी मति भोरी ॥

कालु, कर्म, सुभाउ, गुणु, कहिं ते न जोरु भरे ।  
 सभई अखण्ड ज्ञान निधि, थियड़ा पाप परे ॥  
 पूर्णु चन्द्र जी चान्दिनी, सारो मासु रहे ।  
 जेकी जहिं जदहीं खपे, सो तत्काल लहे ॥  
 घुरिज महल वर्षा थिए, धूप बादल छाया ।  
 कहिं खे सताए कीनकी, कदहिं माहु माया ॥  
 चारई पेर धर्म जा, साबितु रहिया सही ।  
 त्रेता में सत्तुजुग जो, आयो समयु लही ॥  
 हिकु चंवरु छटु अधिक हो, रघुवर जे दरिबार ।  
 घर घर में इन्द्र समाज जो, छायां हो सुखसारु ॥  
 जड़ चेतन राम राज जी, कनि सिकिड़ीअ सां साराह ।  
 निमाणनि जा नाह, गाईनि नितु रघुवीर जसु ॥

### ० चौपायूं ०

दो०-वृन्दावन नेही निर्मल, रघुवर प्रेम अखण्ड ।  
 सन्त चरण पंकज मधुप, स्वामि गरीबि श्रीखण्ड ॥  
 सुखदेवी नन्दन तूं जग वन्दन । सदां जीयें दासनि उर चन्दन ॥  
 प्रीतम प्राण आधार प्यारा । साह जा साहिब जीय जियारा ॥  
 सत्संगति जा सर्वस साई । सुखिड़ा सुहग जा माणीं सदाई ॥  
 भागु सहागु अचलु रहे तुहिंजो । कदहिं न दिसदे दीहड़ो अहिंजो ॥  
 जानिब तुहिंजी जै जै गायां । देवनि द्वारे मंगल मनायां ॥  
 कुशल रहीं करुणानिधि कोमल । गंग नीर खां आहीं निर्मल ॥

पावन प्रेम भण्डार प्यारा । शील सनेह सजान सोभारा ॥  
दीन दुनिया जा वाली सतिगुर । प्रणति पालक रस जा रहबर ॥

दो०-सतिगुर मैगसिचन्द्र जूं, बिन कारण कृपाल ।  
चिरु जीवो साहिब सचा, दीननि बन्धु दयाल ॥

दासनि वत्सल दिलिबर दाता । गरीब परिवर जनपितु माता ॥  
सेवक सुखद सदां हर्षता । जीव सां जोड़ीं नाथ सां नाता ॥  
छलु वलु छदे जो शरणी आयो । करुणा सागर कण्ठ लगायो ॥  
जेके दिलिबर दर ते विकाणा । सहजेई सत्य सनेह समाणा ॥  
खुशियुनि खजाना लाल लुटाई । गणितियूं गमिड़ा मुहब मिटाई ॥  
गुरु भरींदुव सुखनि सां झोली । नाम जे रंग रंगी थव चोली ॥  
अति अनूप आ महिमा तुहिंजी । अहिड़ी ऊँची आहे न कहिंजी ॥  
मालिक तुहिंजी वद्री वदाई । गार्इनि पाण में सिय रघुराई ॥

दो०-हर्ष भरिया हाकिम अबा, शरणिपाल सुखधाम ।  
अति कोमल करुणानिधी, आनन्द कन्द अभिराम ॥

सत्संग जो सचो वेड़िहो वसाई । भलिया जे घर खां घरनि पुजाई ॥  
वरखां विष्णुडियल वर सा मिलाई । रुअनि राम लाइ खुशियुनि खिलाई ॥  
बाबल मिठिड़ा मीरपुरि वारा । सहज सनेही साहिब सचारा ॥  
मां तुहिंजी ब्रान्हीं गोलियुनि गोली । आयसि भरे आशीशुनि झोली ॥  
अजरु अमरु रहीं रस निधि राणा । सिय रघुवर जा लाल निमाणा ॥  
खाणि सुखनि जी साहिब साई । रुह रिहाणि करीमि सदाई ॥

कामिल काणि कढ़ी ना कहिंजी । प्रीतम प्रीति दिनी थव पहिंजी ॥  
 राम कथा जो रसु वर्षाई । गीत गुणनि जा ग़ाई ग़ाराई ॥

दो०-जुगल चरण कमलनि मधुप, मालिक मैगसिचन्द ।  
 प्रेम सुधा पीयो सदां, दासनि जा दिलिबन्द ॥

सदां अवहां जो ब्रख्तु आ बाला । भिनल कृपा में नेण विशाला ॥  
 साई साहिब शोभा सागर । नेह में नागर रूप उजागर ॥  
 मालिकु मिठिड़ो जग जो वाली । सदां विराहे मुहबत माली ॥  
 बृज बनिड़े में धरिड़ो बनायो । साकेत नाथ खे सिरिड़ो निवायो ॥  
 श्रीराधा राधा नामु तो ग़ायो । गुण निधि गोविन्दु गढु त धुमायो ॥  
 मिठिड़ बाबल-बाबल साई । जै जै बाबल चवां सदाई ॥  
 महिर जा बादल महिर भण्डारा । कृपा कोमल परम उदारा ॥  
 लाल हिंडोले में जुगल झुलाई । राम कृष्ण जी कथा बुधाई ॥

दो०-शील सिन्धु शोभा सदन, कथा कल्प तरु नाथ ।  
 सदां जीओ साई अमां, सिय रघुनन्दन साथ ॥

जिय जो जीवनु माणिकु मन जो । हितहुति आहीं वसीलो जन जो ॥  
 जानिब तुहिंजो ज़ाणु न ज़ातुमि । केदो आहीं कीन सुजातुमि ॥  
 सो ज़ाणे जहिं तूं ई ज़ाणाई । प्रेम सुधा जी मौज माणाई ॥  
 साई साहिब बाबल मिठिड़ा । मुल्ह महांगा सोन खां सुठिड़ा ॥  
 सहज मिलिउं तद्गहिं कदुरु न कयडुमि । शील भरिया तो कदहिं न चयडुमि ॥  
 जहिड़ा तहिड़ा मन्दा मेरा । पहिंजा कयड़व कुमति कचेरा ॥

ओ सर्वज्ञ ओ समर्थ साईं । निधर निमाणनि नीहूँ निबाहीं ॥  
जन्म जन्म थियां चरणनि चेरी । परे न कजि जा हुब मां हेरी ॥  
दो०-जै जै मैगसि चन्द्र जूँ, सद् बख्शन्द उदार ।  
प्रेम भक्ति प्रकाश निधि, सत्संगति सींगार ॥

० श्लोक ०

पिरीअ ब्रधार्ई पाग, प्रेमियुनि जे प्रधान खे ।  
नशो वठी नीह जो कयो, रातियां दीहूँ ओजागु ॥  
नितु नेगनि नीरड़ो वहे, मुखिड़े राघव रागु ।  
जहिंजे सोनिड़ी दिलि जो, स्वामिनि चरण सुहागु ॥  
कोट प्राण सम प्यारिड़ा, जहिंखे मैथिलि मागु ।  
साईअ जो सौभागु, अमरगुर अविचलु कयो ॥

( २ )

लकुणुलासानी, आहे लुदण लाल जे हथ में ।  
जहिं दहिशत में डिजंदा रहनि, पंजई अभिमानी ॥  
घुमें लाखीणीलोद सां दिलिबरु दिलि जानी ।  
साहिब जो शानी, कोन्हेको त्रिभुवन में ॥

( ३ )

आनन्दु रहे अचलु, साईं साहिब सन्त जो ।  
कलंगीधरु कर्तारु शल, दिलि खेदीदुनि बलु ॥  
प्रीतमु जहिंजे प्यार खां, पासे थिए न पलु ।  
जिनि जे कृपा कटाक्ष सां, नीहूँ थिए निर्मलु ।  
सभिनि फलनि जो फलु, पातो जिनि प्रतीति सां ॥

( ४ )

चांडोकी आहे सदां, मीरपुरि जे महिलात ते ।  
 अबलु चन्दु उदइ थियो, ऊँदहि सभु लाहे ॥  
 सत्संगी सतारनि जियां, समाज वेठा ठाहे ।  
 बाबलु .बुधाए, रसिड़ा राघव लाल जा ॥

( ५ )

सखावत सरदारु, साई साहिब सतिगुरु ।  
 द्रसियाऊँ ददनि खे, राजल राम प्यारु ॥  
 परा प्रेम पूर्णु रहे, दिलिबर दान भण्डारु ।  
 वेही वर जे विखंह में, वहाईनि रस जी धार ॥  
 सत्संगजा सुकार, साहिब कया हिन्दु सिन्धु में ॥

( ६ )

चाकरनि जी चुक, बाबल सभु बख्शु कई ।  
 जिनि हिक वारी हुब सां, रटी राम नाम जी तुक ॥  
 बाबल दिननि ब्राझसां, भरे भगति जा .बुक ।  
 भव भरियल कृपा करे, कयो सभिनी खे सुक ॥  
 लाहे छदियाऊँ लोक मां, टिन्हीं तापनि जी लुक ।  
 दिलि रांझन सां रुक, मालिक मीरपुरि मीर जी ॥

( ७ )

गौरा ऐं गूड़िहा, वचन बाबल वीर जा ।  
 साईअ लाता दगि सएं, मुंझल ऐं मूड़िहा ॥

वठी विया सभु वर दे, जेके वेठल विसूड़ा ।  
कपटी ऐं कूड़ा, बि रसिया राघव राज में ॥

( ८ )

महबत जी माली, वठी आयुमि वर खां ।  
जानिब घणे जतन सां, सा साह में संभाली ॥  
राहिड़ी राम मिलण जी, दसी सहिंजी सुखाली ।  
लूअँ लूअँ में लालन खे, रघुवर जी लाली ॥  
खावन्द खां खाली, कहिं खे ज़ाणनि कीन की ।

( ९ )

उथी हुब सां हलु, साईअ जे सत्संग में ।  
अबलचन्द्रु अनुराग जो, कोन्हे लोठीअ ललु ॥  
न को जपु न तपु आ, न को विद्या बलु ।  
करुणा निधि कोमलु, ढरंदो पहिंजी ढार सां ॥

( १० )

अजाइबु आहे, मूरत महबूबनि जी ।  
सभेई दुखिड़ा दिलि जा, छदे लहिजे में लाहे ॥  
इश्क जे स्कूल में, नितु प्रेमियुनि पड़िहाए ।  
सुमिहियल अविद्या निंङ्र में, जानिबु जागाए ॥  
वहणनि जे वाणियनि खे, गोलोक्कु घुमाए ।  
ब़ालिड़ा . बुधाए, जिनि सुका घर सावा कया ॥

( ११ )

साकेत जो सरदारु, लथो लाल ललिकार ते ।  
 पलकनि जा पावड़ा करे, साईअ कयो सत्कार ॥  
 माणिकियुनि जे महिलात में, विहारिया बहु गुण बार ।  
 अजाइबु इसिरार, आनन्द कन्द अबल जा ॥

( १२ )

वाहरु वसीलो, विन्दुर जे वणिकार जो ।  
 रहिबरु रसी राह में, थिए हेखिलनि हीलो ॥  
 जिते पहुँचे कोन को, कुटम्बु कंबीलो ।  
 रांझनु रसीलो, उति सिकन्दनि खे सदिड़ो दिए ॥

( १३ )

वृन्दाबन जा बाग, साईअ खे सुखिड़ा दियनि ।  
 जहिंजे पन तृण फूल मां, अचनि रस जा राग ॥  
 अन्दर में अविचलु रहे, श्री आरियलि जो अनुरागु ।  
 गुरु नानक शाह अविचलु कयो साईअ सिर सुहागु ॥  
 गाए मैथिलि मागु, लुदनि लाल हिंदोरड़े ॥

( १४ )

जानिब तुहिंजो जसु, गार्इनि चारेइ वेइ नितु ।  
 श्रुतीअ चयो सनेह सां, ईश्वरु आहे रसु ॥  
 उहो रस जा रूपु तूं, मुहिबु मिठो मैगसु ।  
 तूं ई प्रीतमु पाण आं, तूं दीं पहिंजो दसु ॥  
 सदां प्रीतमु पसु, तूं आशिकु अलबेलड़ो ॥



० गीतु ०

चारई वेद चवनि, सन्त साख दियनि,  
सतिगुर महिमा प्यारी, सभ देवनि खां न्यारी।  
जेके शरणि अचनि, से था रंगिड़े रचनि,  
ध्यानु धारणा तिनि धारी, सभ देवनि-॥

जिनि नाम बुधण ऐं दर्शन सां,  
प्राणनि में शान्ति संचारु थिए।  
वचन अमृत जे वर्षा सां,  
जेको अनूपमु आनन्दु दानु दिए॥  
सारो मोहु छुटे, सभु प्यास मिटे,  
थिए नजर कृपा वारी, सभ देवनि-॥

जहिंजी खोज में कोटि जन्म खां,  
जीउ भटिकन्दो आयो आ।  
सो सुख रूप सलोनो साहिबु,  
सेघ में गुरुनि लखायो आ॥  
सची जोति दिनी, मति रस में भिनी,  
फूली दिलि जी फुलवाड़ी, सभ देवनि-॥

सतिगुरु भगुवन्तु, भगुवन्तु सतिगुरु,  
इहा सारु समुझ पोइ आ पाती।  
प्रभु कृपा जो अवितारु आ सतिगुरु,  
लाल लगनि जहिं आ लाती॥

खोले दिलि जी दरी, दिनो हथिड़े हरी,  
गढु तोसां आ गिरधारी, सभ देवनि-॥३॥

रस राह जो रहिबरु, गुणनि में गहिबरु,  
बिनु कारण कृपालु गुरु।  
प्रेम जो वितरणु करे जगत में,  
शरणागत प्रतिपालु गुरु।  
हिक कृपा जी कोर, तारे अधम किरोड़,  
करे बई लोक सुखकारी, सभ देवनि-॥४॥

सत् चित् आनन्दु विग्रहु सतिगुरु,  
माया ऐं कर्म खां पारि रहे।  
जहिंजे सत् उपदेश बुधण सां,  
जीउ परम पदु सहजि लहे॥  
सो मैगसिचन्दु मधुरता मन्दिरु,  
दिए दीननि दिलिदारी, सभ देवनि-॥५॥

ॐ

(श्री मैगसि सदां खुशि)